गतांक से आगे...

सार्वभौमिक बंधुत्व का आधार मित्रता

➢ ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

कहावत है कि आत्मा स्वयं अपना मित्र है और स्वयं ही अपना शत्रु है। अपने आत्मिक गुण व शक्तियों का प्रयोग करना स्वयं से मित्रता करना है और विकारों के वशीभूत होकर स्वयं को व संबंध-सम्पर्क वालों को दुख, पीड़ा या यातना देना स्वयं से शत्रुता करना है। ऐसी शत्रुता अगले जन्म में भी फलीभूत होकर जीवन नर्कमय बनाती है। महावीर के अनुसार, मेरी मित्रता सारे विश्व से है परन्तु मेरा किसी से भी वैर नहीं है, जो कि सतयुग व त्रेतायुग के सम्बन्धों का सार है।

मित्रता का मर्म है मित्र की गलतियों को नज़रअन्दाज करना

मित्रता शाश्वत हो, इसके लिए कुछ बुनियादी सावधानियां हैं। मित्रता का मर्म है मित्र की गलतियों को नज़रअन्दाज़ करना और उसकी विशेषताओं पर गर्व करना। ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं जिसमें कोई विशेषता न हो। मित्रों को समाज में एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए और जो भी कमियां व गलतियां हों, उन्हें एकान्त में उजागर करना चाहिए। दो मित्रों के मध्य विवाद दिखाता है कि कोई एक गलती पर है परन्तु विवाद यदि लम्बा चलता है तो फिर दोनों ही गलती पर हैं। विवाद शुरू तो मित्रों के मध्य होता है परन्तु इसका जारी रहना शत्रुओं के मध्य होता है। देखा जाए तो विवाद होने का मतलब ही है कि वे मित्र थे ही नहीं, बस मित्रता का आवरण डाल रखा था, जो हल्की सी आंधी में उड़ गया। बैलगाड़ी पर यदि मर्सिडीज कार का कार-कवर डाल दिया जाए, तो अंदर से बैलगाड़ी ही निकलेगी। मित्रता को मिटाने में शक की प्रमुख भूमिका है। शक पैदा होने पर पति-पत्नी के सम्बंधों में भी दरार आ जाती है। यहां तक कि ईश्वरीय ज्ञान मार्ग पर चलता हुआ पुरुषार्थी भी संशय या शक के पैदा होने पर अपने भाग्य को लात मारकर पुरुषार्थ करना छोड़ देता है।

मित्रता को नष्ट करता है उपहास एवं उधार

मित्रता को नष्ट करने का एक अन्य कारण है मज़ाक करना। मज़ाक अर्थात् किसी बात में व्यंग्य, उपहास, तिरस्कार आदि का मिश्रण करना। मज़ाक करके शत्रु को मित्र नहीं बनाया जा सकता परन्तु मज़ाक करने पर मित्र ही शत्रु बन जाता है। आज चूंकि सहनशीलता का अभाव है और देह अभिमान सिर चढ़ कर कार्य करता है अत: मज़ाक को बर्दाश्त नहीं किया जाता। मित्रों को आपस में धन का लेन-देन या उधार लेना-देना नहीं करना चाहिए। कहा भी गया है कि कर्ज़ मित्रता का मर्ज़ है, जिससे मित्रता की मृत्यु हो जाती है। मित्रों में उपहार या सौगात की लेन-देन भी ठीक नहीं है। ऐसी सौगात उस मित्र की याद दिलाती रहती है जबकि दोनों मित्रों द्वारा याद किया जाना चाहिए परमपिता शिव को। बेहतर तो यह होगा कि मित्र को उससे सम्बन्धित एक प्यारा व न्यारा विचार भेंट करें। उपहार टिकाऊ नहीं होता परन्तु प्रेरणादायक बोल मित्र की स्मृति में जगह बना लेते हैं। उपहार, लेन-देन का हिसाब बनाता है जबकि श्रेष्ठ विचार मित्र के बन्धन काटने वाले हो सकते हैं। कई अनमोल विचार जीवन को पलट देने वाले होते हैं।

सज्जनों की मित्रता धीरे-धीरे बढ़ती है

मित्रों को कभी एक दूसरे से चतुराई नहीं करनी चाहिए, खास कर खान-पान के नियमों में। मित्रों में नेकी कर दरिया में डाल की भावना होनी चाहिए और दूसरे से न तो अपेक्षा करनी चाहिए, न ही उसकी कभी उपेक्षा करनी चाहिए। मित्रों में आपसी

हास हो, उपहास नहीं, वाद हो, विवाद नहीं। किसी से पहली बार मिलने पर उसके बारे में कोई धारणा नहीं बनानी चाहिए और चूंकि यह कलियुग है अत: मित्रता को मन्थर गति से धीमी आंच पर लम्बे समय तक पकने देना चाहिए। चूंकि आज सभी मुखौटाधारी हैं अत: पहली ही मुलाकात में संस्कारवश किसी से मित्रता कर लेना उस व्यक्ति से जल्दी ही दुख मिलने का कारण बन सकता है। अब वह समय नहीं कि किसी से भी यूं ही मित्रता कर ली जाए। कहा जाता है कि दुष्टों की मित्रता जल्दी बढ़ती है और सज्जनों की धीरे-धीरे। परन्तु दुष्टों की मित्रता को मित्रता नहीं कहा जा सकता क्योंकि जिसके भी अन्दर मैत्री-भावना जीवित है, वह दुष्ट नहीं हो सकता। दुष्टों में दिख रही मित्रता तो एक समझौता है। समझौता उसी प्रकार का होता है, जिस प्रकार कि बेईमानों में आपसी ईमानदारी होती है।

भिन्नता का आदर करें

ऐसा होता नहीं कि दो मित्रों के स्वभाव-संस्कार एक समान हों। एक-दूसरे की भिन्नता का आदर करना मित्रता का प्राण है। आध्यात्मिक नियमों पर चलने वाले पुरुषार्थियों में भी भिन्नता होती है परन्तु वे एक-दूसरे के पुरुषार्थ का सम्मान करते हैं। पुरुषार्थ में ब्रह्मचर्य और खान-पान के नियमों का पालन शक्ति-पुंज का कार्य करते हैं। यदि एक पुरुषार्थी मित्र निमित्त बनता है दूसरे के किसी नियम के टूटने के, तो इसका विकर्म बड़ा भारी है। पुरुषार्थ में कभी भी नहीं डिगना, यह एक अच्छी बात है परन्तु पुरुषार्थ में डिग कर फिर पहले से भी ज्यादा ऊंचाई प्राप्त कर लेना, यह अति श्रेष्ठ बात है। पुरुषार्थ में चुनौतियां स्वीकार करनी चाहिएँ क्योंकि इनसे या तो सफलता मिलती है या अमूल्य शिक्षा।

प्राथमिकता दें चरित्र को

विकारों व मित्रता में उल्टा संबंध है। काम विकार के कारण आज सारे संबंध तार-तार होते जा रहे हैं। दृष्टि की अपवित्रता ने कितने सहयोगी व संबंधियों को शत्रु बनाया है, यह किसी से छिपा नहीं है। दैहिक काम से आत्मिक-मुकाम (शान्तिधाम व सुखधाम) विस्मृत हो जाता है। क्रोध से बड़ा मित्रता का नाशक दूसरा कोई नहीं। लोभ के कारण तथाकथित मित्रों के मध्य अविश्वास व धोखा आम बात हो गई है। परिवार में माताओं का अपनी सन्तान से इतना मोह होता है कि औलाद बिगड़ जाती है और फिर पति-पत्नी के मध्य इसी बात पर दोषारोपण होता है, जिससे दाम्पत्य जीवन में प्रेमभाव-मैत्रीभाव समाप्त होकर कटुता का ज़हर फैलता है। ईर्ष्या रूपी दीमक, मित्रता के वृक्ष को कुतर डालती है। दो आलसी व्यक्तियों की मित्रता तो टिक सकती है परन्तु एक यदि कर्मशील व समय का पाबंद है और दूसरा आलसी, तो पहला उससे जल्दी ही तौबा कर लेता है। मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि दो विकारी मनुष्य एक-दूसरे के सच्चे मित्र कभी नहीं हो सकते और दो सद्गुणों से युक्त मनुष्य एक-दूसरे के शत्रु कभी नहीं हो सकते। यदि कभी मित्र का चयन करने की छूट हो, तो प्राथमिकता अगले के चरित्र को देनी चाहिए, न कि अच्छे व्यक्तित्व को। चरित्र है उज्ज्वल संस्कार जबकि व्यक्तित्व में अभिमान की अल्प मिलावट उसी प्रकार से हो सकती है जैसे कि सोने के गहने बनाने में थोड़ी खाद या खोट मिलाई जाती है।

मित्रता करें भगवान शिव और उनके बच्चों से

एक कहावत है कि मारै तो हाथी, लूटै तो भण्डार अर्थात् चींटियों को मार कर और भिखारियों को लूट कर कितना लाभ हो सकता है! अत: मारना ही है तो हाथी के समान माया व विकारों को मारा जाए और लूटना ही हो तो ज्ञान रत्नों को लूटा जाए। विकार हों या अज्ञान की दकियानूसी बातें, इनके निर्यातक हमारे मित्र या साथी-संगी ही होते हैं। इनसे जो कुछ भी प्राप्त होता है, उसकी चेकिंग नहीं की जाती। स्थूल धन कहीं लुट न जाए, यह एक चिन्ता का कारण होता है परन्तु ज्ञान का धनी तो सदा लुटना व लुटाना चाहता है परन्तु लूटने वाला विरला ही दिखाई देता है। यह विचित्रता ही है कि कुसंग का रंग फौरन लगता है और सद्गुणों का रंग अगले को बमुश्किल चढ़ता है। जैसेकि कोयला कपड़े को काला कर देता है जो जल्दी छूटता नहीं परन्तु फूलों की पंखुड़ियां या टैलकम पाउडर कपड़े पर पड़ जाए तो झटकने से सहजता से उतर जाता है। परन्तु ये कुछ समय तक की खुशबू तो छोड़ ही जाते हैं। अत: यह बहुत-बहुत आवश्यक है कि संगदोष से बचा जाए, जो तब ही संभव है, जब मित्रता में पड़ने की बजाय तटस्थता (साक्षी भाव) व सतर्कता से संबंध निभाए जाएं। यदि मित्रता करनी ही है तो परमपिता शिव से व शिव के अनन्य बच्चों से की जाए। शिव चूंकि निराकार है, अत: उसका साथ तभी संभव है जब (1) उसके समान बना जाए, (2) जब उसे समीप अनुभव किया जाए और (3) जब वह सर्व संबंधों से याद आता रहे। फिर तो आत्मा सम्पूर्णता को प्राप्त कर अपना मित्रलोक (परलोक, सतयुग) सुरक्षित कर लेगी। शिव को साथी या मित्र के रूप में प्राप्त करना केवल चल रहे संगमयुग में ही संभव है।

आज ज़रूरत है यथार्थ विश्वामित्रों की

आज विश्व की स्थिति विस्फोटक है। सभी देश एक-दूसरे से किसी न किसी मुद्दे पर टकराव की स्थिति में हैं। विश्व में जो भी अशान्ति है, उसका कारण मित्रता की कमी है। मित्रता न होना या मित्रता का टूटना अशान्ति पैदा करता है। धर्मों की विविधता आज झगड़ों की विविधता बन गई है। आम आदमी मित्रता में जीता है और मित्रता का टूटना उसे दुखी व अशान्त बनाता है। विभिन्न धर्मों के अनुयायी एक दूसरे के धर्म के प्रति वैमनस्य (शत्रुता) रखते हैं। परिवार टूट रहे हैं व कचहरियों में मेला-सा लगा रहता है। आपसी मित्रता आज गुज़रे ज़माने की बात हो गई है। आज ऐसे यथार्थ विश्वामित्रों की आवश्यकता है, जो विश्व के मित्र बन वैश्विक सौहार्द को बढ़ा सकें। ऐसे में विश्व भर में फैले ब्रह्माकुमार-कुमारियां मित्रता व भाईचारे का सन्देश फैलाने का कार्य कर रहे हैं। वे ईश्वरीय श्रीमत पर चल कर आपसी प्रेम व मित्रता बढ़ाने के ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बन रहे हैं। वे एक मित्र समूह का हिस्सा बन रहे हैं, यह समूह आने वाली नई सतयुगी दुनिया में प्रत्यक्ष होने वाला है।

आइये, अपने आत्मिक गुणों व शक्तियों का विश्व कल्याण हेतु प्रयोग करें। सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए मैत्री-भाव से दूसरों के दुख व सन्ताप को कम करने के ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनें। मैं इस दुनिया में मित्रों के बीच रह रहा या रही हूँ, इस स्वमान से सभी को मित्र समझें। यदि सभी मित्र हैं तो मायावी व विकारी संकल्पों से बचा जा सकता है जिससे फिर ईश्वरीय स्मृति में टिकना सहज होता है। अन्ततोगत्वा, मित्रता के दायरे को बढ़ा कर सार्वभौमिक बंधुत्व में बदल दें ताकि आत्मिक व वैश्विक संपन्नता प्राप्त हो सके। (समाप्त)

जीवन में मधुरता का गुण धारण करना ही महानता है